भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

महात्मा गांधी की वापसी के 100 वर्ष
100 YEARS OF MAHATMA GANDHI'S RETURN

विवरणिका
BROCHURE

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	: :	8 जनवरी, 2015 8 January, 2015
मूल्यवर्ग Denomination	: :	2500, 500 पैसा 2500, 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें Stamps Printed	: :	9 लाख प्रत्येक 0.9 Million each
मिनिएचर शीट Miniature Sheet	: :	5 लाख 0.5 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

100 YEARS OF
MAHATMA GANDHI'S RETURN

Mahatma Gandhi was a great man, a visionary, a person of extraordinary moral and physical courage. His identity as a political activist was an important prelude to his return to India, where he played a pivotal role in securing its independence from British rule. Mahatma Gandhi was the primary leader of India's independence movement and also the architect of a form of civil disobedience that would influence the world in the years to come.

Gandhi arrived in South Africa in 1893 as a newly qualified lawyer, on a temporary assignment, to act on behalf of a local Indian trader in a commercial dispute. However, by the time he left South Africa for the last time in 1914, he had already earned the appellation, 'Mahatma' (or Great Soul) for his work in securing significant legal concessions for the local Indian population in South Africa. For over a decade, he prepared numerous petitions and memoranda, led deputations to the authorities, wrote letters to the press and tried to promote public understanding and support- in South Africa, as well as in India and Britain- for the cause of the Indians in South Africa. His professional practice also came to be largely devoted to the same cause.

During his time in South Africa, he also developed the strategy known as *Satyagraha* (truth-force), in which campaigners went on peaceful marches and presented themselves for arrest in protest against unjust laws. This passive resistance or *Satyagraha* was born and evolved in South Africa before coming to India and eventually, the world. This form of action became one of the greatest political tools of the 20th century. Satyagraha promoted non-violence and civil disobedience as the most appropriate methods for obtaining political and social goals.

Gandhiji's stay in South Africa proved to be an important phase in his path to becoming a leading political figure of the 20th century. It was here that he developed his political views, ethics and leadership skills.

On 9th January, 1915, Gandhiji returned to India, where he supported the Home Rule movement, and became leader of the Indian National Congress, advocating the policy of non-violent, non-cooperation to achieve independence. His goal was to help poor farmers and laborers protest oppressive taxation and discrimination, with the ultimate objective being self-rule for India. He was unique in his leadership style and his ability to draw the Indian masses into the freedom struggle.

The Department of Posts joins the nation in celebrating 100 years of the Return of Mahatma Gandhi to India by releasing a set of two commemorative postage stamps.

Credits:-

Text	:	Based on the information furnished by the proponent and the Internet
Stamp/FDC	:	Sankha Samanta
Cancellation	:	Alka Sharma

महात्मा गांधी की वापसी के 100 वर्ष

महानता की प्रतिमूर्ति महात्मा गांधी, अद्भुत दूरद्रष्टा और असाधारण नैतिक तथा आत्मिक बल के साकार रूप थे। राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में बनी उनकी पहचान ने उनकी भारत वापसी की पृष्ठभूमि तैयार की, जहां उन्होंने देश को ब्रिटिश हुकूमत से आजादी दिलाने में निर्णायक भूमिका निभाई। महात्मा गांधी, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता थे, जिन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन को ऐसा स्वरूप प्रदान किया, जिसका प्रभाव आगे चलकर पूरी दुनिया में देखने को मिला।

गांधीजी नवोदित अधिवक्ता के रूप में, एक वाणिज्यिक विवाद के मामले में एक स्थानीय भारतीय व्यापारी के प्रतिनिधि के तौर पर, अस्थायी कार्य के प्रयोजन से 1893 में दक्षिण अफ्रीका पहुंचे थे। तथापि, 1914 में दक्षिण अफ्रीका से अंतिम बार विदा होते समय तक, वे वहां के स्थानीय लोगों को अहम मोर्चों पर कानूनी जीत दिलवाने के कारण 'महात्मा' (अर्थात् महान आत्मा) की उपाधि अर्जित कर चुके थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों के सरोकारों के लिए एक दशक से अधिक समय तक अनेक याचिकाएं और ज्ञापन तैयार किए, प्रतिनिधिमंडलों का नेतृत्व कर प्राधिकारियों से भेंट की और प्रेस को पत्रादि लिखने के साथ–साथ, दक्षिण अफ्रीका के अतिरिक्त भारत और ब्रिटेन में भी लोगों को जागरूक किया और समर्थन जुटाया। उनकी वकालत भी अधिकतर इन्हीं सरोकारों के प्रति समर्पित रही।

दक्षिण अफ्रीका में अपने प्रवास के दौरान, गांधी जी ने *सत्याग्रह* का मार्ग भी अपनाया, जिसमें आंदोलनकारी अन्यायपूर्ण कानूनों के विरोध में शांतिपूर्वक मार्च करते हुए गिरफ्तारी देने के लिए स्वयं हाजिर हो जाते थे। भारत में और अंततोगत्वा विश्व पटल पर स्थापित होने से पहले, *सत्याग्रह* का उदय और विकास दक्षिण अफ्रीका में हुआ था। आंदोलन का यह रास्ता 20वीं सदी के सबसे प्रभावी राजनीतिक उपायों में गिना जाने लगा। *सत्याग्रह* में इस बात का प्रचार–प्रसार किया गया कि राजनीतिक और सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में अहिंसा और सविनय अवज्ञा का मार्ग ही सबसे न्यायोचित मार्ग है।

गांधी जी के 20वीं शताब्दी के अग्रणी राजनेता के रूप में उभरने के सफर में उनका दक्षिण अफ्रीका प्रवास, महत्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। यहीं रहते हुए उन्होंने अपने राजनैतिक विचारों, नैतिक दृष्टिकोण और नेतृत्व कौशल का विकास किया।

9 जनवरी, 1915 को गांधी जी भारत लौट आए। यहां उन्होंने स्वराज आंदोलन का समर्थन किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व संभालते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अहिंसा पर आधारित असहयोग की नीति की प्रबल हिमायत की। उनका उद्देश्य, भारत में स्वराज की स्थापना के परम ध्येय को ध्यान में रखते हुए, दमनकारी कर प्रणाली और भेदभाव का विरोध करने में, निर्धन किसानों और मजदूरों की मदद करना था। गांधी जी की नेतृत्व शैली अनूठी थी तथा उनमें जन–जन को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने की अद्भुत क्षमता थी।

डाक विभाग, महात्मा गांधी की भारत वापसी के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दो डाक–टिकटों का सेट जारी कर राष्ट्र के साथ सम्मान की अभिव्यक्ति करता है।

आभार :–

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री तथा इंटरनेट पर आधारित
डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण	:	शंख सामंत
विरूपण	:	अलका शर्मा